VOL- X ISSUE- I JANUARY 2023 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.367 ISSN 2349-638x

श्यौराज सिंह बेचैन के संघर्षों की अनोखी कहानी

प्रकाश चंद्र (शोधार्थी)
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा, गुजरात

शोध सार :

प्रस्तुत शोध पत्र में श्यौराज सिंह बेचैन कि जीवन में घटने वाली घटनाओं का सिलसिलेवार वर्णन किया गया है।अध्ययन के दौरान जिन परिस्थितियों का वर्णन उनके द्वारा किया गया है । वे सभी बातें पाठकों तक पहुंचनी चाहिए जिससे समाज में गरीब बच्चों का मनोबल संकट में पलायनवादी नहीं बल्कि ऐसी समस्याओं से दृढ़ता के साथ सामना करने की शक्ति प्रदान करने की क्षमता विकसित करती है इसलिए यह साहित्य में बहुत ही चर्चित आत्मकथा मानी जाती है ।और देश-विदेश की कई भाषाओं में अनुवाद भी हो गया है। अनेकों विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। जिससे यह पता चलता है कि समय के साथ पाठकों में ज्यादा पढ़ी जा रही है।

शब्द कुंजी : *समस्याओं, कठिनाई, परिश्रम, संघर्ष, मजदूरी , राजमिस्त्री, कर्ज , श्यौराज ज्ञात हुआ पाया, आठवीं-नौवीं चर्चित, लेखक, किताबें।*

प्रस्तावना :

दलित साहित्य के जाने-माने कवि, लेखक ,आलोचक, पत्रकार एवं बुद्धिजीवी श्यौराज सिंह बेचैन वर्तमान समय में दिल्ली विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष हैं। जीवन में नियमित स्कूल में न जाने के बावजूद वे अध्ययन शीलता एवं लगन के बल पर शिक्षा के शिखर पर पहुंचने वाले एक प्रतिष्ठित दलित साहित्यकार हैं। जो समकालीन चर्चाओं में बढ़ चढ़ कर भाग लेने वाले चर्चित दलित लेखक है। विश्व हिंदी साहित्य सम्मेलन में प्रतिभाग भी किया है । ये पहले शोधार्थी थे जिनके शोध प्रबंध को लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है। श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कन्धो पर' सत्यता से प्रमाणित करने के लिए एक विदेशी शोधार्थी बेचैन के घर, ससुराल एवं बहन माया के घर तक गाया जिससे आत्मकथा में आए हुए प्रसंगोका प्रत्यक्षीकरण किया जा सके। इस तरह की आत्मकथा का होना साहित्य में दलित विमर्श की सच्चाइयों को सिद्ध करती है । आने वाले समय में पाठकों एवं शोधार्थियों के लिए इनका साहित्य उपयोगी सिद्ध होगा।

निरीक्षण : Objervation

1.श्यौराज सिंह बेचैन का बचपन से वयस्कता तक बच्चे से पुरुष बनने तक यह एक दुर्लभ महाकाव्यात्मक साहित्य है क्योंकि प्रेम, गरिमा और मुक्ति की तरह इसका हर एक शब्द सपना है ।जो आने वाले समय में अनमोल मोती के समान होगा क्योंकि समाज मुक्ति भय से, मुक्ति भूख से ,मुक्ति छुआछूत से, मुक्ति जाति बंधन से, मुक्ति वर्ण व्यवस्था पर आधारित समाज के उत्पीड़न और अमानवीयता भरे पोंगा पंडित कर्मकांड से। लेखक के जीवन में जिस घटना के कारण जीवन रूपी बगिया विरान हुई उसका माध्यम बेचैन की छोटी बुआ मानती की शादी का अवसर था जहां लेखक के पिता राधेश्याम उनकी शादी में शामिल होने के लिए गए थे। बेचैन जी के अनुसार मेरे घर परिवार के जो संस्कार रहे हैं उनमें शराब ,जुआ या अन्य व्यसनों के लिए कोई जगह नहीं थी फिर भी कुछ लोगों ने मजबूरी में पिताजी को शराब पिलाई गई जिसके कारण उनकी तबीयत खराब हो गई थी जिसके कारण उनकी मृत्यु हो जाती है । शोध के दौरान शोधार्थी को ऐसे प्रसंग आज भी देखने को मिल जाते हैं जहां शादी विवाह जैसे शुभ अवसरों पर समाज में आज भी बहुत सारे लोग धूम्रपान करके खुशियों के माहौल को मातमी बना देते हैं।

शोधार्थी ने अपने शोध में पाया कि परिवार के विवरण से पता चलता है कि परिवार में बड़े बब्बा भागीरथ, छोटे बाबा गंगी और ताऊ बाबूराम तीनों नेत्रहीन थे । चौथे बब्बा विद्याराम जिनके पुत्र मेरे पिताजी थे उनके पैर बैलगाड़ी से टूट

गए थे। अब उनके परिवार में शरीर से सकुशल उनकी माता और पिता जी थे उनमें भी पिता जी की मृत्यु शीघ्र हो जाती है । मेरे पिता की मौत से पहले ताई या मां कभी बाहर दूसरों के खेत क्यार की मजदूरी करने नहीं जाती थीं। शोध के दौरान शोधार्थी ने पाया की लेखक अपने पिता की स्मृतियों में खो जाता है उसे ऐसा लगता है कि मैंने कल ही अपने पिता का दाह संस्कार किया है ।मैं जब भी किसी दाह संस्कार में शामिल होता हूं तो अपने पिता की यादों में डूब जाता बड़ी मुश्किल से उस घटना से फिर उभर पाता। ऐसी हालत लेखक की हो गई थी। अब हमारी तबाही और अभावों का क्रम तेज हुआ तब जाना कि पिता क्या होता है ? उसकी कमी बच्चों के जीवन में कितनी बड़ी त्रासदी होती है ? लावारिस पाकर अहिरों द्वारा हमारी मेड़े काट ली गई थी। खेत को अमर सिंह यादव और रामवीर जो पड़ोसी थे रात में काट ले जाते थे या अपने पशुओं को उसमें खुला छोड़ देते थे । जिससे हमारी फसल बर्बाद हो जाती थी। शोधार्थी को आज भी ऐसी समस्या गाँवों में दृष्टिगोचर होती है।

2.उन्हीं दिनों के दौरान शोधार्थी को ज्ञात हुआ कि दो जून की रोटी के लिए भी लेखक के सामने बहुत बड़ी चुनौती उत्पन्न हो गई थी। बैचेन जी ने अपनी आत्मकथा में लिखा " दुबक छिपकर दांये चलाने वाले बैलों के गोबर से गेहूं निकाल कर लाते थे और उन्हें धोकर आटा बना लेते थे और उसी को हम यूज करते थे। कभी-कभी खाल उतारने के बाद पशु मांस के लालच से लेखक भी पशु उठाई के काम में रुचि लेता था।"[1] एक बार जब भूख के कारण कुछ भी खाने को न मिला तो वह यादवों के खेतों से ढ़डाइन बटोरी के लाया मां ने उसे पकाया हम सभी खाकर जहां तहां गिरे और सभी बेहोश हो गए थे।यह दृश्य सबसे पहले मेरी ताई ने देखा और उसने ही गांव में शोर मचा कर हम सभी को बचाया। बड़ी मुश्किल से सभी को उल्टी कराया गया जिसके कारण जान में जान आई। यह कैसा संयोग है कि उसी दिन शाम को सौतेले पिता भिखारी घर आए थे? "सेर दो सेर मक्का का आटा और मसूर की दाल लेकर लौट आए थे उस रात रोटी का जो स्वाद था वह भूला नहीं जा सकता था। अमृत यदि कहीं रहा होगा तो वह उस दाल के पानी जैसा रहा होगा।"[2] किसी बच्चे का जीवन पिता हीन हो जाना ऐसी रिक्त है जो फिर कभी भर नहीं पाती । यह सौभाग्य की बात है मेरा स्कूल में दाखिला भिखारी ने प्राथमिक विद्यालय में सौतेले भाई रूप सिंह के साथ स्कूल में दाखिला कराया था। मैं कुछ ही दिनों में सारे अक्षर पहचानना शुरू कर दिया था लेकिन वह देर में सीख रहा था मेरी इसी प्रतिभा को देखकर हर प्रसाद जी अहेरिया ने भिखारी से कहा यह आपका बेटा श्यौराज पढ़ने में होशियार है। यह खबर सुनकर तीनों भाइयों में खलबली मच गई और वे मेरी पढ़ाई को बंद कराने की जुगत सोचने लगे। शोधार्थी ने पाया की समाज में आज भी सौतेले बच्यों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता है।

छोटे लाल चाचा की असहमति के बावजूद भिखारी ने तम तमाते हुए सिलौटी उठाई और मेरी दोनों तख्तियां सिलौटी मारकर तोड़ दी और स्कूल के थैले से किताबें निकालकर फाड़ना चाहा तो अम्मा ने लपक कर झटके से किताबें छीन ली। तो मां को मार कर अधमरा कर दिया और मेरी किताबों पर तेल की डिब्बी उड़ेल कर माचिस की तीली लगाकर जला दिया। ऐसा करके उसने सोचा कि चलो हमने सौतेले श्यौराज के विद्या अर्जन का मार्ग हमेशा के लिए बंद कर दिया लेकिन लेखक का पढ़ने का इरादा इन सब घटनाओं से और भी तीव्र होता जा रहा था ।लेखक अपनी आत्मकथा में लिखता है कि हर दिन मैं इस जुगाड़ में रहता था कि कहीं से चार छह आना हाथ लगे तो मैं कोई किताब खरीद लूं और उसे लटूरिया या अन्य साथी के घर में छुपा कर रख दूं इसलिए एक दिन लेखक डालचंद चाचा के जेब से एक रुपए के नोट निकालकर मां की खाली पड़ी काजल की डिब्बी में रखकर नाली में छिपा दिया ।चोरी का इल्जाम अम्मा पर लगा। भिखारी ने मां को कसाई की तरह पीटा । डालचंद ने मां के शरीर पर लाठियां बरसाई थी अम्मा का पूरा शरीर एवं मुंह सूज गया था । इतने पर भी मुझ पर पढ़ने के प्रति ऐसी दीवानगी दिमाग पर सवार थीं । मेरी चोरी की सजा मां को मिली थी । "मुझ स्वार्थी को मां की कराहो में भी किताब की याद आ रही थी। अम्मा की पीठ पर हल्दी पोतते हुए मुझे ऐसा लगा मानो मां की देह पर मेरी किताब के अक्षर छपे हैं और मां पूरी की पूरी किताब हो गई थी।"[3]

लेखक ने आत्मकथा में ऐसी ही एक घटना मेरे स्मृति में याद आती है सन 1962 की बात है मैं भी हाथों में झंडा लेकर "विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ,झंडा ऊंचा रहे हमारा "गीत गाते हुए मैं भी बच्चों के साथ चल रहा था इसकी सूचना(दादा)भिखारी को पता चला तो मुझे इस गुस्ताखी करने की सजा मिलनी शुरू हो गई थी। लात घूंसे, थप्पड़,

गालियां और चमड़े के बने नाले से मेरी पीठ पर मार पड़ी थी । अम्मा ने मुझे डांटा "फेंक दे झंडा और कान पकरि के कसम खा अब पढ़िबे वारिनु के संग नाई जाइगो। इनकी सौहबति छोडि देंगे।"[4] शोधार्थी को शोध के दौरान ज्ञात हुआ लेखक छह सात साल का बालक अपनी पढ़ाई की उक्त शर्तें और जरूरतें कहां से पूरी करता ? पढ़ाई तो पहले ही छूट गई थी अब बचा था पढ़ाई करने का मोह जो छूट नहीं रहा था। इस घटना के करीब बारह साल बाद तक छात्र के रूप में मैंने किसी भी विद्यालय का मुंह नहीं देखा। जो कुछ थोड़ा बहुत पढ़ा वह बाल श्रम करते हुए अनौपचारिक रूप से अभिरुचि के अनुसार पढा था। हमारे बस्ती के कई लोग हमारे हमदर्द थे उसमें गणपत बाबा की बीवी, लटूरी की मां मानो बुआ और डंबर की मां हमारी मदद करती थी। वे हमारी पिटाई करने और पढ़ाई रोकने को अच्छा नहीं कहती थी क्योंकि उस समय इस समाज में कोई भी बच्चा इस मुश्किल घड़ी में पढ़ने वाला नहीं था। शोध के दौरान शोधार्थी को ऐसा महसूस हुआ कि जब मैं इस आत्मकथा को पढ़ता हूं तब- तब मैं इसकी स्मृतियों में खो जाता हूं जो मुझे सोचने के लिए विवश कर देता है कि किस तरीके से एक अबोध बालक के मन में पढ़ाई के प्रति इतनी उत्कंठा है जो बड़ी मुश्किल से देखने पर मिलती है इस आत्मकथा को मैंने कई बार पढ़ा और जितनी बार पढ़ा उससे मैं भाव विह्वल होकर कुछ लिखने पढ़ने के लिए विवश हो जाता हूं। यह आत्मकथा गरीब, दलित, आदिवासी के लिए एक प्रेरणा स्रोत है। श्यौराज सिंह बेचैन ने अपनी बचपन की यादों को ताजा करते हुए लिखा है कि मुझे चाहे एक पैसा मजदूरी कम मिले पर रोटी मिले, यह मेरी इच्छा होती थी क्योंकि उस समय लेखक कि जो सबसे आवश्यक वस्तु थी वह रोटी, कपड़ा और एक सहारे की जरूरत थी जो उसे नहीं मिल पा रही थी। लेखक अपने संघर्ष को जारी रखते हुए जसराज के साथ राजमिस्त्री का कार्य सीखा और उन्हें ही अपना गुरु बना लिया। शोधार्थी को शोध के दौरान ऐसे कई प्रसंग मिले जहां पर लेखक रोटी के लिए लड़ता हुआ दिखाई देता है।

शोध के दौरान शोधार्थी को ज्ञात हुआ कि बाजपुर में रहते हुए लेखक ने सरदार कुंदन सिंह के कहने पर उनके बेटों के लिए " शहीदों की सीख" नामक एक छोटी सी नाटिका लिखी थी जिस पर उन बच्चों को पहला पुरस्कार मिला एवज में चंदन सिंह ने श्यौराज सिंह बेचैन को एक कीमती कुर्ता और पैजामा भेंट किया था।"[5] लेखक की प्रतिभा का श्री गणेश हो जाता है। जो लगातार चलता रहता है।

3.श्यौराज सिंह बेचैन शिक्षा रूपी नैया पर सवार होने के दौरान वह श्याम लाल यादव से शिक्षा के लिए पांच सात बार कर्ज लिया था जिसे वे खाली समय में काम करके पढ़ाई को जारी रखते हुए उन सभी का कर्ज भी वे उतारा करते थे। बेचैन शिक्षा के दौरान ही "संत रैदास के बारे में जाना कि वह भक्त होने के साथ-साथ चर्मकार भी थे। मराठी के प्रसिद्ध संत कवि चोखा मेला अजीवन मृत पशुओं को उठाते रहे और बेलदारी करते वक्त शरीर पर दीवार गिरने से उनकी मृत्यु हुई थी।"[6] बेचैन अपनी शिक्षा के दौरान इन समस्याओं से वे दो-चार होते रहे बचपन में एक मजदूर के रूप में वे बीड़ी पीते थे। बब्बा के साथ नारियल का हुक्का गुड़गुड़ाते थे परंतु वह मेरी आदत कभी नहीं बनी। मुझे शुरू से पढ़ने और लिखने से बड़ी कोई तलब नहीं थी इसलिए हमेशा मैं शिक्षा के लिए ही संघर्ष करता रहा। श्यौराज सिंह बेचैन ने दिल्ली में कई साल गुजारे थे। जहां पर उनके मौसा देवी दास जी ने प्रथम बार कक्षा चार में संध्याकालीन स्कूल में उनका दाखिला कराया था लेकिन दुर्भाग्य से पहले दिन ही लेट हो जाने के कारण पुनः स्कूल में जाने का अवसर नहीं मिला था। लेखक ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि "वह स्कूल में नामांकन होने से पहले दिल्ली की आजादपुर मंडी से नींबू लाकर मोहल्ले में घूम-घूम कर बेचने का काम करता था और उस बेचने के दौरान ही वह जोड़-तोड़ करके कविता बनाने लगा था। लेखक ने स्वयं लिखा है कि मेरी तुकबंदी की पहली कविता का जन्म दिल्ली में नींबू बेचते हुए हुआ था।"[7]

शोध के दौरान शोधार्थी को बेचैन के बारे में बहुत कुछ पढ़ने और अनुभव करने की बातें मिलती है बेचैन के अनुसार शहरों में औरतें बच्चे पैदा करने और पालने की मुसीबत तो लेती नहीं है पले पलाए बच्चे गोद लेने के चक्कर में रहती हैं जैसे कि स्वयं एक पंजाबी दंपत्ति उन्हें गोद लेने के लिए लल्लायित रहते थे। बेचैन जी ने आत्मकथा में लिखा है "मेरी बचत फुटपाथी पुस्तिकाएं खरीदने, पढ़ने के लिए ही खर्च होती थी। दिन भर काम करना रुचि और अपने स्तर की किताबें पढ़ने के अलावा मेरा कोई शौक नहीं था।"[8] लेखक ने अपनी आत्मकथा में लिखा है मेरे हालात मेरे विद्यालय थे और मेरे संपर्क में आने वाले लोग मेरे शिक्षक थे। शोध के दौरान पता चला की बेचैन जी ने अपनी आत्मकथा में लिखा

है "मैं जो पढ़ता था वह शौक के तौर पर पढता था और मेरा स्कूल तो पूरा समाज, पूरा देश था। किसी निश्चित परिधि में मेरा कोई अध्ययन मनन नहीं था। पैसे नहीं तो रोटी ही सही पर मेहनत से किसी न किसी तरह कमाकर, मुफ्त में नहीं, यही अहम गुण मेरे खून में मेरी कौम और मेरे पुरखों के स्वभाव व संस्कार में समाहित था।"[9] शोध के दौरान ज्ञात हुआ लेखक ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि "क्या हुआ जो राजकिशोर (जनसत्ता में) तुम्हें कबीर जैसा अक्खड़ लिखते हैं। अजीब बात है दिल्ली छूटी, बाजपुर छूटा, कसेर भी छूटी, गांव बार-बार छूटा, पर यादें हैं कि कुछ भी नहीं छोड़ पाई सब कुछ तो चला आया स्मृतियों के साथ, मैं इतना सुखी और समृद्ध हो गया कि मेरी कविताएं, कहानियां, उपन्यास और आत्मकथा बिल्कुल भी गरीब नहीं रह गई है।"[10] मेरे गांव में जूनियर हाई स्कूल के निर्माण के समय जो मैं ईट गिलाया ढो रहा था उसी समय मैं मौलिक गीत भी गुनगुना रहा था-

"चलो स्कूल करें तैयार
पढ़े-लिखे हो जावे हुशियार।
गांव को और बड़ों होई नाम,
करो भाई सब मिल जुल के काम।"[11]

जिसे स्कूल शिक्षक श्री कुंवर बहादुर सिंह यादव ने यह बात स्कूल के हेड मास्टर खुशीराम यादव से बताया तो उन्होंने पास बुलाकर कहा था मास्साब अपने गंगी चमार के नाती में कवि होने के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। मेरी पढ़ने की इच्छा जानकर मेरा टेस्ट लेकर पांचवी छठी कक्षा में बिठा देंगे। उन्हीं दिनों गांव में होने वाले आर्य समाज की मीटिंग में मुझे अब सर्वसम्मति से उपाध्यक्ष बना दिया गया था और श्यौराज सिंह के नाम के साथ आर्य शब्द जोड़ दिया गया था। मेरे जीवन का यह पहला दिन था जब किसी ने मेरी काव्य अभिव्यक्ति की सार्वजनिक जरुरत महसूस की थी और आदर से कुछ कहने के लिए बुलाया गया था। कविता में प्रभाव के कारण पुरस्कार में दो-तीन रुपए मिले थे उसे अपने आर्य समाज की मंडली को दान में दे दिया था। रघुनाथ शास्त्री जी से मैं पूछा था कि जो मैं लिख रहा हूं वह कविता है या नहीं तो वह जवाब देते हैं हां कविता तो है पर इसमें तो संस्कृत काव्य परंपरा का पालन नहीं हो रहा है दूसरे तुम्हारे ऊपर उर्दू के मुस्लिम शायरों का बहुत गहरा प्रभाव है इसी राह पर चलते रहे तो न हिंदी के कवि बन पाओगे और न उर्दू के शायर खिचड़ी बन कर रह जाओगे तुम। आर्य समाज में मेरा कद बढ़ गया था उसी के कारण प्रेमपाल सिंह यादव ने पहली बार मुझे आवाज दी श्यौराज! श्यौराज! उन्होंने मेरे सौराज नाम को पहली बार श्यौराज कहा। तभी से मैं तुमसे बहुत प्रभावित हूं मेरी राय में तुम्हें किसी तरह पढ़ाई करनी चाहिए बिना पढ़ाई किए तुम्हारा काव्य प्रतिभा बेलदारी और राजगिरी में दबकर मर जाएगी अगर तुम्हें अवसर दिया जाए और तुम उसका सही उपयोग कर पाओ तो तुम्ही अकेले हो जो इस गांव का नाम दूर तक रोशन कर सकते हो। शोध के दौरान यह ज्ञात हुआ कि इस बच्चे की प्रतिभा को सबसे पहले मास्टर प्रेमपाल सिंह यादव ने ही पहचाना था और उसे एक पहचान देने के लिए इस बच्चे का मार्गदर्शन किया। मैंने कहा मेरे लिए खुशीराम मास्साहब और कुंवर बहादुर साब ने भी सोचा है स्कूल में दाखिला भी मिल जाएगा, पर रोटी कहां से आएगी? अभी तो मैं खुद कमाता हूं तब खाता हूं न किसी का एहसान न किसी की दया। यदि मैंने आज ही काम करना छोड़ दिया तो कल से पेट के लिए किसका मुंह तकूँगा? मैं उन दिनों रामचरण के साथ काम सीख रहा था। प्रेमपाल सिंह ने मेरी मां से कहा था-- "मेरी इच्छा इसे हमेशा अपने घर रखने की है पर यह दूर तक जाएगा। पूत के पांव पालने में मां को दिखे न दिखे पर अध्यापक को दिखते हैं दादी। आप तो मां है और मैं मास्टर हूं मैं जो देख सकता हूं वह आप नहीं।"[12] मैं होली के तीसरे दिन सूर्य निकलते समय प्रेमपाल के घर पहुंच गया था। लेखक ने अपनी आत्मकथा में लिखा है मैं एक एक अक्षर के बदले अपने खून की एक-एक बूंद दे दूंगा पर पढ़नो नाँय छोड़ेंगे। जो तुम सब मेरे खिलाफ हो तो मैं आज से चमरियाने में ही आनो छोड़ि दिगो सोई जाए करेंगे मास्टर जी के घर में, भाड़ में जाई बिरादरी और चूल्हे में जाई घर- परिवार। मैं पढ़गो अपने बलबूते पै। लेखक के ऐसे कठोर शब्दों का उत्तर मेरी मां ने भी कठोरता के साथ ही दिया। वह बोली "आज से मैं समजुंगी कि सौराज मरि गओ। मैंने एक बेटा पैदा ही नाय करो, मैंने नौ महीना अपनी कोख में एक पत्थर ढोओ। आज से सौराज पूरी बस्ती कूं मरे के बराबर है। अब तू जो मन में आवै सो करि। मैं तो दो में से एक ही रास्ता चुन सकता था पढ़ाई के लिए अम्मा परिवार और बिरादरी को छोड़ दूं या उनके लिए पढ़ाई का सपना।"[13]

प्रेमपाल सिंह का कथन है मुझे तो भूल ही जाएंगे पर तुम्हें उदाहरण बनाकर अपने बच्चों को प्रेरणा देंगे, जाति का

गौरव बताएंगे। सच पूछो श्यौराज मैं भी यही चाहता हूं कि तुम उदाहरण बनो। मेरा पूरा यकीन है कि तुम सृजन और साधना की दिशा में मुझसे भी आगे जाओगे। मैं एक दिन तुम्हें अपना शिष्य बना कर आध्यात्मिक ज्ञान की खोज में निकाल ले जाऊंगा। तब भी ये लोग ऐसा ही कहेंगे। लेखक अपनी आत्मकथा में लिखता है कि मेरा प्रवेश छठवीं क्लास में दहगवां इंटर कॉलेज में प्राइवेट परीक्षा देने के कारण पास होने के बावजूद भी मैं अपना अंकपत्र लेने नहीं गया था। तीसरा स्कूल मैंने आठवीं में स्वामी पूर्णानंद विद्यालय चिरौरी बुलंदशहर में प्रवेश लिया। प्राचार्य ने कहा "इस दिन को याद रखना बेटे समझ लो यहाँ से तुम्हारी जिंदगी एक नई करवट ले रही है असल में आज तुम्हारा नया जन्म हुआ है यह संस्कार सर्वोपरि है।"[14]

शोधार्थी के शोध के द्वारा ज्ञात हुआ कि लेखक की एक ही इच्छा थी वह थी पढाई। बाकी सभी उसके साधन थे।

स्वामी पूर्णानंद में लेखक का दूसरा या तीसरा दिन था। 5 सितंबर को शिक्षक दिवस का कार्यक्रम था परंतु मैं दो-चार दिन ही पढ़ पाया था। स्कूल का कार्यक्रम देखने का मेरे जीवन का वह पहला दिन था। उसके बाद संचालक महोदय ने घोषणा की अब विद्यालय में छात्र के रूप में संभावनाएं लेकर आए एक नए विद्यार्थी श्यौराज को मैं कविता पाठ करने के लिए बुलाना चाहता हूं । लेखक खड़ा तो हो गया लेकिन उसके पैर कांपने लगे। जुबान खुल नहीं पा रही थी। आवाज अस्पष्ट एवं घबराहट भरी हो गई थी। वह कविता पाठ किए बिना ही बैठ गया। लेखक जीवन की घटनाओं को याद करते हुए लिखा है। डिबाई दिगंबर कॉलेज में वाद विवाद प्रतियोगिता का पत्र आया था विषय था प्रजा तांत्रिक प्रणाली में देश के हित में है या अहित में। मैंने पक्ष में हाथ उठाया था और परिणाम जब घोषित हुआ तो प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान छात्राओं को मिले। मुझे सांत्वना पुरस्कार देकर बिठा दिया गया था। नौवीं क्लास में पढ़ते समय एक विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन स्कूल में हुआ। मैं अपना काव्य पाठ पूरा करके अपनी जगह लौटा तो देखते ही देखते तीस- चालीस रुपया मेरे हाथों पर आ गया तो लगा पहले दिन की नाकामयाबी की प्रतिक्रिया का ही यह नतीजा है। उस दिन बहुत खुश हुआ था। मैं कहां छात्र बनने में शंका थी? और कहां पुरस्कृत छात्र हो गया था? दसवीं में पढ़ते समय लाला होती लाल गुप्ता से जब मैंने तीन सौ रुपया सैकड़ा माहवार ब्याज पर लिए थे तो अनोखीया बऊ ने एक तरह की गारंटी ली थी। उस समय बच्चों के शादी विवाह करने के लिए कर्ज लेते थे पढ़ने के लिए कोई नहीं। उन दिनों रामसिंह हमारी बस्ती का पहला ग्रेजुएट बना था और शायद पहला दलित लेखपाल भी वही बना था। शोधार्थी ने शोध के दौरान लेखक की घटनाओं से द्रविभूत हुए बिना नहीं रह पाता है।

स्वामी पूर्णानंद में पढ़ने के दौरान ही मेरे सौतेले पिता भिखारी प्रेमपाल सिंह के पास आकर मेरी पढ़ाई रोकने की बात करते है। श्यौराज अपनी पढ़ाई लिखाई के सपनों की फिर से हत्या होने की कल्पना भर से मेरा हृदय कांप उठता था मैं अपने प्रयासों से पढ़ना चाहता था। मैंने कहा "मैं पढ़ना तो नहीं छोड़ूँगा बाकी जो कहो सो मान लूँगा।"[15] ऐसे निश्चय के सामने दुनिया की सभी समस्याएं छूमंतर हो जाती है। बेचैन अपनी आत्मकथा में लिखा है प्रेमपाल सिंह के घर रहता था तो उनकी बेटी मलना की जब मृत्यु हो जाती है तो उस समय मैं अनोखिया बऊ की बहुत सेवा की थी। बऊ अब मेरी एक और मां जैसी थी। गांव के रिश्ते से मैं उनका ससुर लगता था पर व्यवहार में वे मुझे कभी प्रेमपाल का छोटा भाई जैसा कहती और अपना बेटा मानती थी। शोध के दौरान शोधार्थी को ज्ञात हुआ कि श्यौराज सिंह बेचैन अछूत सर्वहारा समाज से थे उनके पास था ही क्या खोने को? शरीर की मेहनत बेच देता था और पेट भरता था। स्कूल जाने से पहले श्रम शोषण की नदियों के कई घाटों का पानी पी चुका था, कई तरह के अनुभव से गुजर चुका था। जब मैं नौवीं क्लास में था उसी समय गोपाल ठाकुर द्वारा लिखित भगत सिंह पर मैं नास्तिक क्यों बना? पुस्तक पहली बार मेरे हाथ लगी थी। 'युवावेदी' और 'युवकदर्पण' का तो मैं नियमित पाठक भी बन गया था। जब मैं गांव में आकर स्कूल जाने लगा तो मेरे दिमाग में कोर्स की किताबें कम और बाहरी पुस्तके अधिक जगह बनाने लगी थी। मेरे बड़े भाई नत्थू लाल जी मुझसे एक शर्त लिया कि तुम हाईस्कूल पास कर लेने से पहले कोर्स की किताबों को ही पढ़ोगे।

शोध के दौरान शोधार्थी को पता चला कि जिस तरीके से लेखक प्रेमपाल सिंह यादव के घर पर रहकर उनके सारे काम को नि:शुल्क और मेहनत के साथ कार्य करता है उसी तरह से उसके व्यवहार से प्रभावित होकर भूगोल के अध्यापक चौधरी रघुनाथ सिंह जो पीतमपुर में रहते थे उनके घर पर भी रहकर बेकारी का काम कुछ दिन करता है।

लेखक अपनी आत्मकथा में लिखा है कि गुरु माता ने पहले दिन से ही मेरी दाल सब्जी का कटोरा और गिलास चक्की वाले कमरे में अलग रखवा दिया था। मैं अपने उस विद्यार्थी जीवन को लेकर अकेले में कई बार फफक-फफक कर रोने लगता था । पर ना जाने कहां से मेरे भीतर यह आशा बलवती हो उठती थी कि जो कष्ट, शोषण और मुसीबत आज है वह कल नहीं होगी। दिवंगत पिता तुम्हारे न होने से मेरे साथ और क्या-क्या होना बदा है? श्यौराज सिंह बेचैन ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि मैं राजमिस्त्री में सबसे कम उम्र का था भवन निर्माण के अलावा कुएं से की चिनाई का काम बेहद जोखिम भरा था। उसे भी पढ़ाई के दरम्यान करता था क्योंकि मैं पढ़ाई के साथ-साथ रोटी की भी व्यवस्था करता था। आठवीं का परिणाम अंकों की दृष्टि से बेशक बहुत उत्साहवर्धक नहीं था। परंतु मैं अगली क्लास में जा रहा हूं इस बात की मुझे तसल्ली थी मेरे लिए पास होना सब कुछ था और फेल होना कुछ भी नहीं होना था। आठवीं पास होते ही महाकवि बनने के सपने देखने लगा था साहित्यकार संकट में बनते हैं, यह सोचकर अपने कष्टों को योग्यता की शर्तों में जोड़ लिया था। लेखक अपनी आत्मकथा में लिखता है कि हल चलाते समय या मजदूरी करते समय मेरे जेब में पड़ी पेंसिल निकालने लगा और पाव हल के नीचे चला गया। उंगलियों से दो ढाई इंच ऊपर का हिस्सा कटकर मास उलट गया। पंजे की हड्डी दिखाई देने लगी। इस तरीके से मैं कवि बनते हुए एक अपाहिज बनने से बच गया। श्यौराज सिंह बेचैन अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि यदि मैं स्वतंत्र काम कर रहा होता तो एक दिन काम करने के बदले चार दिन रोटी खा सकता था। बऊ जानती थी कि मुझे रोज दाल रोटी चाहिए। पर उसने मेरे आत्मसम्मान को घायल करने वाला जो शब्द कहा था उसे सुनकर मैं घर लौट आया था। इन दिनों मै प्रेमपाल के घर जाना छोड़ दिया था। काम कुछ कर नहीं सकता था और बिना काम किए बऊ रोटी दे नहीं सकती थी जबकि वह मेरी मां होने का दावा भी करती थी। मैं सोचता हूं क्या माँ ऐसा कर पाती? अब मैं संकट में फंस गया था। शोध के दौरान शोधार्थी को दृष्टिपात हुआ कि प्रेमपाल सिंह के द्वारा लेखक के साथ बहुत ही अमानवीय व्यवहार किया जाता है जिसे लेखक शिक्षा पाने की लालसा में उसे भी सहज स्वीकार कर लेता है।

शोध के दौरान शोधार्थी को ज्ञात हुआ की लेखक के पिता की मृत्यु जिस घर में हुई थी उसी घर में रहने के लिए कुछ दिन हाई स्कूल का एग्जाम देने के लिए वह अपने बुआ के घर जाता है। उसके साथ जैसा व्यवहार होता है उसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकता था वह लिखता है। पढ़ने का सामान था इसलिए स्कूल के बजाय सीधा धुर्रा प्रेमनगर छोटी बुआ के घर गया वहां एक वृद्धा थी उसने मुझे घर में प्रवेश ही नहीं दिया उसी घर में पिता की मृत्यु हुई थी। मैं गांव से बाहर होते ही यह सोचकर फूट-फूटकर रो पड़ा था। उसी गांव के मेरे मित्र हरदयाल ने मुझे आवाज लगाकर रोका देखो श्यौराज तुम्हारे लौट जाने से पूरे नगर में चर्चा हुई है। मेरी अम्मा कह रही है बेटा तू श्यौराज कूँ लौटा ला, सामने वाली कुटिया खाली है जहां पर लेखक महीने दो महीने रह कर अपने अध्ययन को जारी रखता है। लेखक प्रेमनगर की एक घटना का स्मरण किया है। जब मैं मुसीबत में फंसता हूँ तो मास्टर साहब हर समस्या का समाधान साहस और ईश्वर की भक्ति में बताते थे। तुम सब काट लोगे देखो बिना मुसीबत उठाएं कोई महान नहीं बनता। श्री कृष्ण भगवान भी जेल में ही पैदा हुए थे। ईश्वर पर भरोसा रखो और साहस से काम लो। जाड़े के दिनों में बड़ी मुश्किल से मास्टर साहब अपनी भैंस की पुरानी झूल को ठंड से बचने के लिए देते हैं। मैं नवी कक्षा में आ तो गया था परंतु बड़े कम अंकों के साथ पास हुआ था । मेरे यहां तो पूर्वजों की किसी भी ज्ञात पीढ़ी में कोई साक्षर तक नहीं हुआ था। श्यौराज नौवी से आगे नहीं बढ़ सकता ऐसी भविष्यवाणियां तो मेरे गांव में मास्टर शिवपाल सिंह, मोहकम सिंह यादव और उलफत सिंह जाटव कर ही चुके थे और यहां स्कूल में हरदयाल का अपना अनुभव था जो यह बताता था कि पास होना एक टेढ़ी खीर के समान ही था।

5.श्यौराज सिंह बेचैन ने अपनी आत्मकथा में लिखा है की मास्टर प्रेमपाल सिंह के संगति के दो प्रमुख असर मेरे ऊपर थे एक व्यायाम करना और दूसरा सिर पर बाल न रखना। बेचैन के ऊपर बोर्ड परीक्षा के भय का भूत सवार था दिमाग पर, उत्तीर्ण होना मेरे अस्तित्व के लिए चुनौती था। तपस्या सा स्वाध्याय था । मुझे नींद कम आती थी कुछ ठंड के कारण और कुछ चिंता के कारण। लेखक एक घटना का स्मरण करते हुए बताता है कि मैं नौवी पास का अंकपत्र लेकर अम्मा को दिखाने पाली गया उस समय भिखारी ने मुझे मुर्दा मवेशी उठाने के लिए काम पर लगा दिया और मेरे ऊपर इतना ज्यादा

बोझा कर दिया कि मैं रास्ते में ही गिर पड़ा था। 'मरि गओ ससुरी को' कहते हुए डालचंद ने खींझकर ऊपर से एक लात और दे मारी। अम्मा को नौवी पास होने का प्रमाण पत्र और ज्यादा दिन दिखाया तो ये लोग बदले में मेरी लाश ही दिखा देंगे। नौवी का नतीजा हाथ में पकडाते हुए सियाराम यादव ने कहा था। तुम्हें आगे सख्त मेहनत करनी होगी कईयों के लिए मेरा छात्र कर्म एक तरह का प्रयोग था। श्यौराज सिंह बेचैन अपनी आत्मकथा में लिखते हैं मास्टरों के कपड़े धोना, कमरों की सफाई कर देना, विद्यालय के पीछे स्थित बाग से लकड़ियां लाना उन्हें चीरना इत्यादि चल सकता था। परंतु खाने-पीने की वस्तुओं को छूना मना था। संस्कृत अध्यापक श्री सियाराम आर्य ने कहा “चमार के हाथ से छिली हुई सब्जी खाना अच्छी बात है क्या? तुम खा पाओगे तोमर साहब? मेरे गले के नीचे नहीं उतरेगी एक अछूत के हाथ से छुई हुई सब्जी।"[16] लेखक अपने जीवन में ऐसे बहुत सारी घटनाओं का वर्णन करता है मेरे बाबाओं की पुश्तैनी जमीन के दो टुकड़े बिक चुके हैं। घर खंडहर में बदल चुके हैं। मैं शिक्षक बन गया तो जिंदा हूं, लिख रहा हूं, कुछ करता दिख रहा हूं वरना भाई-बहन बुआ मौसी उनके बच्चे सब क्या हैं? कहां हैं? तोमर साहब नौवी क्लास में मुझे नागरिक शास्त्र पढ़ाते थे और मैं छात्र के नाते कह सकता हूं कि वह बहुत अच्छा पढ़ाते थे। नागरिक शास्त्र के अध्ययन ने मेरे भीतर नागरिक अधिकार और कर्तव्यों का जो बोध जगाया था उससे मेरे विचारों में बड़ी शक्ति आयी वरन संस्कृत साहित्य तो मुझे क्रांति हीन अतीत जीवी, पुरातन वादी बना देता। नौवीं क्लास में हिंदी विषय का पेपर देते हुए प्रथम प्रश्न पत्र में कविता की व्याख्या करते हुए मैंने एक अपनी कविता कॉपी पर लिख दिया परीक्षा भवन में ड्यूटी दे रहे शिक्षक ने जब कॉपी पर हस्ताक्षर करने आए तो देख लिया और जाकर प्राचार्य मनोहर भरद्वाज को बताया तो उन्होंने गुड....वेरी गुड यह सुनकर मेरा सीना चौड़ा हो गया था।

शोध के दौरान शोधार्थी को पता चला लेखक दोनों साल पास हुआ यह जानकर नगला में रहने वाले स्त्री - पुरुष मुझसे प्रसन्न थे। वे मेरी सफलता को अपनी सफलता मानते थे हर मां अपने बच्चे को श्यौराज की तरह पढ़ने को बार-बार कहती थी। लेखक अपनी पढ़ाई के दौरान बातों को याद करते हुए लिखता है कि मैं जाड़े के दिनों में भैंस की पुरानी झूल ओढ़कर बैठा पढ़ता रहता था। पढ़ने लिखने से मैं तब ही हटता था जब शौच आदि के लिए उठ कर जाना होता या भूख लगने पर खाना बनाना होता था वरना सारा समय पढ़ने में ही व्यतीत करता था।

अध्ययन के दौरान एक घटना का वर्णन करते हुए लेखक लिखता है सुंदरिया गहरा चुंबन लेकर बोली कितनी लगन है तुम्हारे दिल में पढ़ाई की हर हाल में पढ़ते रहते हो और एक मेरे बच्चे हैं। चार-चार साल स्कूल में रखकर लौटा दिए। मैं परीक्षा पूरी कर अपने सामान के साथ निकला तो उसने साइकिल का हैंडल पकड़ लिया। धीमे स्वर में बोली वापस कब लौटोगे पता नहीं एक बार जरूर लौटना चाहूंगा। लेखक अपनी आत्मकथा में लिखता है मैंने प्रेम नगर में रहकर दो-दो दिन भूखे पढ़ाई की बऊ को अमानत के रूप में सौंपा आधा बोरा गेहूं मुझे उन्होंने वापस नहीं दिया था फिर भी मैं उनके गेहूं की रखवाली करता रहता था। लेखक अपने समाज की समस्याओं को देखकर लिखता है स्कूल जाने की उम्र में बच्चे जूतियां गाँठने जाते थे। मैं जब से हाथों में जूता साधने लायक हुआ, बूट पॉलिश तभी से करने लगा था। ऐसा ही हाल गरीब के बच्चों के साथ है। भारत की एक पूरी आबादी के बच्चे इसी तरीके से शिक्षा रूपी ज्ञान से कोसों दूर भटक जाते है। पूंजीवाद हटाओ, समाजवाद लाओ जो बच्चे पढ़ पाएंगे, वे बच्चे बढ़ पाएंगे। संस्कृत का एक श्लोक “माता शत्रु पिता बैरी यो न पठिते बालका: को मैं रोज अर्थ कर करके अपनी बस्ती के लोगों को सुनाया करता था। जो माता-पिता बच्चों को नहीं पढ़ाते वे उनके शत्रु और वैरी होते हैं। वे हिंदूवर्ण वादी कवि पाठ्यक्रम में भी घुसे हुए थे जबकि मैं भावुकता और रोमांस से बचकर यथार्थ का कवि बनना चाहता था पता नहीं आज तक बन पाया भी हूं या नहीं। मेरा संस्कृत का पेपर जिस दिन था उस समय मैं अपने गांव में आया हुआ था। गांव से स्कूल की दूरी 25 से 30 किलोमीटर की दूरी थी। जब मैं स्कूल पहुंचा तो एक घंटे से अधिक समय बीत चुका था । प्रेमपाल सिंह का परिचय दिया तो मुझे स्कूल में बैठने की इजाजत मिल गई। इस तरीके से मैं परीक्षा में बैठ पाया था। होती लाल के चार सौ में से करीब ₹ दो सौ कर्ज और ब्याज दे दिया। मुंशी श्याम लाल यादव के तीन सौ का कर्ज मेरे सिर पर बकाया था। नत्थू लाल के प्रेरक पत्रों को मैंने पिछले बीस साल से संभाल कर रखा हूं। वे मेरे लिए गाइडलाइन जैसे रहे हैं। खैर जो भी हुआ गांव में यह खबर अहम थी कि गंगी का नाती दसवीं पास हो गया। यह खबर केवल मेरे बिरादरी के लिए चर्चा का विषय नहीं था, बल्कि

तेलियों, फकीरों, बनियों और यादवो के लिए खास खबर थी। सबसे पहले यह खबर पड़ोसी बाल्मीकियों में फैली शिशुपाल सिंह यादव मास्टर मोहकम सिंह यादव ने प्रेमपाल सिंह से शर्त लगा रखी थी कि श्यौराज हाई स्कूल पास नहीं कर पाएगा दसवीं का नतीजा आ गया था और मैं पास हो गया था।

शोध के दौरान शोधार्थी को ज्ञात हुआ है कि अगर लेखक फेल हो जाएगा तो समझो मेरा इस दिशा में चलने का इरादा ही खत्म हो जाएगा अब दूसरा प्रयास नहीं कर पाऊंगा फेल होने का मतलब मैं हमेशा के लिए बेलदार मजदूर बना रहूंगा नहीं मुझे आगे बढ़ना है इसलिए वह नियमित लगातार पढाई को जारी रखता है। मैं हाई स्कूल द्वितीय श्रेणी में पास हुआ था नतीजा देख कर मेरी खुशी का ठिकाना न था परंतु आगे की पढ़ाई कैसे होगी? इसकी व्यवस्था मुझे करनी थी सबसे पहले मैंने गांव वालों का कर्ज उतारना जरूरी समझा इसके लिए मेरे साथ जिनका भी हाथ साथ रहा हो उनका मैं आभारी हूं। लेखक अंत में जो भी हो अब गंगी के नाती की यात्रा का दूसरा चरण शुरू होगा उसे ऊंची पढ़ाई करनी है साहित्य के क्षेत्र में, देश की सेवा करनी है, किसानों, कम्युनिस्टों, दलितों और छात्रों के बीच जाना है।

निष्कर्ष : (Conclusion):--

प्रस्तुत शोध आलेख में "श्यौराज सिंह बेचैन के संघर्षों की अनोखी कहानी" में बेचैन जी के जीवन में घटने वाली घटनाओं का वर्णन किया है कि किस तरह समाज में जैसे ही किसी के साथ अप्रिय घटना घटित होती है ।उसके कुछ दिनों के बाद ही लोगों की संवेदनाएं समय के साथ बदल जाती है ।उसके बुरे दिनों की शुरुआत हो जाती है। ऐसी ही समस्याओं का बेचैन जी भी सामना करते हैं । वह पढ़ाई को जारी रखने के लिए समाज में लोगों से कर्ज लेकर अध्ययन को जारी रखते हैं इसके लिए अपने गुरु माता अनोखियां बऊ को जमानतदार भी बनाते हैं लेकिन जैसे ही हल से पैर कटता है वैसे ही उसके व्यवहार में परिवर्तन हो जाता है ऐसे कटु शब्द कहती है कि पुनः उस पर विश्वास करना मुश्किल हो जाता है। श्यौराज सिंह बेचैन अपनी आत्मकथा में स्वयं लिखते हैं-- प्रेमपाल सिंह का दर्जा मेरे जीवन में बहुत ऊंचा है। उन्होंने मुझसे बिना मजदूरी दिए कई वर्षों तक काम करवाया परंतु पढ़ने का मौका दिया, उसका ऋण मै कभी नहीं चुका सकता। उसके बिना मैं पढ़ नही पाता। गाँव में बेकरी मजदूरी करते कब का मर- खप गया होता। मैं कोई अकेला नहीं, हजारों लाखों में से एक हूं। मैं उन्हीं में से एक हूं जो आज भी बत्तर ज़िंदगी जी रहे हैं । गांव में मुर्दा मवेशी उठाने का काम, बेकरी, राजमिस्त्री एवं कुओं की चुनाई का काम किया।

श्यौराज सिंह बेचैन जी के जीवन में समस्याओं का क्रम लगातार बना रहता है लेकिन इन कठिनाइयों में वे अपने ,मनन ,चिंतन ,मेहनत के बल पर अध्ययन रूपी तपस्या पर सदैव तत्पर रहें। यह उनका विश्वास एवं लगन था जो उनकी किस्मत के बंद ताले को खोलने का कार्य करता है शोधार्थी इस आत्मकथा का समग्र अध्ययन के बाद कई दिनों तक चैन से सो नहीं पाया। ऐसी घटनाओं से भरा जीवन लेखक का रहा है जो पढ़ने वाले बच्चों के लिए यह प्रेरणा का स्रोत सदैव बना रहेगा । बेचैन जी के जीवन में जो भी घटनाएं घटित हुई उसे शोधार्थी पाठकों तक पहुंचाना चाहता है जिससे श्यौराज सिंह बेचैन के बारे में सरलता और समग्रता से जाना और समझा जा सके।

श्यौराज सिंह बेचैन के संघर्षों की अनोखी कहानी इस शोध पत्र में निष्कर्ष के रुप में कहा जा सकता है कि बालक श्यौराज बचपन में मोची गिरी ,चमड़े उतारे, घास काटी, फसल बोई खेती क्यारी- दाँय, हाकी, कोल्हू चलाया, भट्ठे पर ईंट पाथा, कुली का काम किया, शादी में बाजा बजाया। बाजपुर में ज़मीन तोड़ने फ़सल बोने, काटने तथा ईख खोदने का काम किया। दिल्ली में रहने के दौरान नीबू, अण्डा, अखबार बेचे , पत्थर घिसाई का कार्य किया, होटल में बर्तन साफ किए। निकिल कारखाने में हेल्परी का काम किया। श्यौराज इन सभी कार्यों को करते हुए भी पढाई की ज्वाला रंच मात्र भी मंद नहीं पड़ी जबकि आज के समय में ऐसे संघर्षशील व्यक्ति मिलना मुश्किल ही नहीं असम्भव सा लगता है। बेचैन जी ने अपनी आत्मकथा में एक स्थान पर लिखा है। एक मैली सी किताब मेरे जेब या थैले में अवश्य रहती थी।

सन्दर्भ सूची:--

1. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या -- 30
2. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या -- 45

3. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या -- 63
4. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या -- 64
5. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या -- 151
6. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या -- 194
7. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या -- 55
8. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या -- 266
9. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 286
10. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या -- 289
11. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या -- 290
12. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या -- 299
13. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या -- 301
14. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या -- 309
15. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या -- 319
16. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ संख्या -- 372